E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2020; 2(2): 69-71
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 05-05-2020
Accepted: 08-06-2020

डॉ देवकान्त
राजनीतिक विज्ञान,
तिलका माँझी भागलपुर
विश्वविद्दालय, भागलपुर, बिहार,
भारत।

डॉ संजीव कुमार यादव
राजनीतिक विज्ञान,
तिलका माँझी भागलपुर
विश्वविद्दालय, भागलपुर, बिहार,
भारत।

Corresponding Author:
डॉ देवकान्त
राजनीतिक विज्ञान,
तिलका माँझी भागलपुर
विश्वविद्दालय, भागलपुर, बिहार,
भारत।

वैश्विक आतंकवाद एवं विश्व–शांति

डॉ देवकान्त एवं डॉ संजीव कुमार यादव

प्रस्तावना

वर्त्तमान सदी में आतंकवाद का उदय मानव–समाज के लिए गंभीर खतरा है। आतंकवाद समाज की एक ऐसी विकृति है, जिसने समसामयिक जगत में अशांति, असुरक्षा, संत्रास, त्रासदीपूर्ण भयावह वातावरण पैदा किया है। वस्तुतः आतंकवाद एक ऐसा समाज विरोधी विध्वंसक कार्य है जो हिंसा एवं घृणा–द्वेष पर आधारित है। 11 सितम्बर, 2001 को USSA के न्यूयार्क नगर के World Trade Centre पर आतंकी हमला तथा 13 दिसम्बर, 2001 को नई दिल्ली स्थित संसद भवन पर पाकिस्तानी हमला आतंकवाद के ज्वलन्त उदाहरण है। आतंकवाद विश्व के समक्ष गंभीर चुनौतियों में से एक है। आए दिन हम आतंकी घटनाओं के बारे में सुनते–जानते रहते है। विश्व के प्रत्येक भाग में आतंकी संगठन कार्यरत है तथा हिंसक घटनाओं को अंजाम देते रहते है। विश्व का प्रत्येक देश आतंकवाद की पीडा से संत्रस्त है तथा विश्व–शांति के लिए आतुर है। आतंकवादी कार्रवाईयाँ लोकतंत्र के मूल्यों, मान्यताओं के विरूद्व है। यह बैलेट के बदले बुलेट के सिद्वान्त में विश्वास करता है। यह नृशंस हिंसा, विध्वंस, पृथकतावाद पर आधारित एक अमानवीय साजिश हैं। यह मानवाधिकारों पर अहिंसक, निर्मम प्रहार है। आतंकवाद की चुनौती का सामना करने तथा विश्व–शांति की स्थापना के लिए विभिन्न देशों अर्थात सम्पूर्ण विश्व–समुदाय में एकजुटता की आवश्यकता है। वैश्वीकरण के दौर में आतंकवाद का मिटना नितान्त आवश्यक है।

उद्देश्यः

प्रस्तुत आलेख वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद अथवा क्षेत्रीय, अर्न्तदेशीय आतंकवाद के स्वरूप, कारण, आयाम के अध्ययन का प्रयास है। साथ ही विश्व–शांति की दिशा में बाधक इस समाजिक, राजनीतिक, अपराधिक समस्या के समाधान का प्रयास है।

अवधारणा

आतंकवाद मूल्य आधारित, अति व्यवहृत, दुर्व्यवहृत और अशुद्ध अर्थ परिवेष्टित एक अवधारणा है। यह एक संकल्पित रचना है, जो भयारोहन तथा राजनैतिक परिवर्त्तन चाहती है। आतंकवाद का आविष्कार प्रशासन और शासित के आत्मविश्वास को पूर्णतः ध्वस्त करने के लिए किया गया है। समानान्तर सरकार का गठन और लोगों के बीच असुरक्षा की भावना का वास कराना इसका लक्ष्य है। जनता में मनोवैज्ञानिक पंगुता भरने तथा उनकी मानसिक शक्ति को क्षीण करने के लिए आतंकवाद को प्रायोजित किया जाता है।

अर्न्तराष्ट्रीय युवा सम्मेलन में अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के संबंध में ऐसा मत प्रकट किया गया है– ''किसी राष्ट्र में आतंक मचाने के लिए वर्ग–विशेष अथवा व्यक्ति विशेष के विरूद्ध किसी राजनीतिक उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु जो हिंसा फैलाई जाय, वह आतंकवाद है।

आधुनिक संदर्भ में आतंकवाद का अर्थ है– हिंसा का ऐसा प्रयोग, जो सैनिक दृष्टि से नहीं, बल्कि लक्ष्य (शिकार) को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करे। दूसरे राष्ट्रों में आतंकवाद एक प्रकार का भयादोहन (Black Mail) ही है। इसकी उपयोगिता राजनीतिक व राजनयिक है। यही बुनियादी अन्तर क्रांतिकारियों एवं आतंकवादियों में है।

कुछ आतंकी संगठन, अर्न्तदेशीय संगठित अपराध गिरोहों में से एक प्राकृतिक साझेदारी भी रखते है। उनकी पहुँच राजनितिज्ञों तक आसानी से होती है जो आतंकी समूह के लिए मददगार है। इस आलोंक में सर्वप्रथम दाउद इब्राहिम का नाम है। आतंकवाद है एक तरह का मुसोलिनी, हिटलर का नाजीवाद या फासीवाद। विकसित उग्र राष्ट्रवाद, अल्जीरिया तथा वियतनाम, काश्मीर समस्या, ईरान संकट, ईराक–अमेरिका युद्ध, श्रीलंका लिट्टे संघर्ष तथा अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन पर हमला, नेपाल में माओवादी आतंक, बांग्लादेश में घुसपैठियों के रूप में आतंकवादियों का प्रवेश, चीन के मुस्लिम–बहुल क्षेत्र को एक नया राष्ट्र घोषित करने का इरादा, चेचन्या संघर्ष आदि संकल्पित आतंकवाद के दृष्टांत है।

आतंकवाद के तत्वः

- आतंकवाद एक संगठित योजनाबद्ध एवं सुव्यस्थित रूप से किसी किसी व्यक्ति अथवा समूह द्वारा हिंसा का मार्ग अपनाना हैं।
- यह किसी देश की वर्त्तमान व्यवस्था को चुनौती देने अथवा उसे उखाड़ फेंकने के लिए राजनीतिक प्रेरणा से किया गया बल प्रयोग है।
- यह बहुमत को अल्पसंख्यक के सामने झुकने हेतु बाध्य करने के लिए भयादोहन (Black mailing) तथा बल प्रयोग का एक हथियार है।
- यह किसी अनुचित माँग को पूरा कराने हेतु दहशत में डालने के लिए हिंसा का मार्ग है।
- इसके द्वारा देश के किसी हिस्से, किसी विशेष समुदाय, सैनिकों अथवा शासनतंत्र के बीच भय का वातारण उत्पन्न किया जाता है।
- यह सर्वदा अवैध, अमानवीय एवं अलोकतांत्रिक है।

आतंकवादी जिन साधनों का प्रयोग करते है वे सचमुच घातक एवं हृदयविदारक
होते है। निर्दोष व्यक्तियों को अपना शिकार बनाना, भीड़–भाड़ वाले इलाके में बम–विस्फोट करना, अंधाधुंध फायरिंग करना इसके महत्वपूर्ण साधान है। अपनी मांग या शर्त्त पूरा कराने के लिए वे आत्मधाती दस्ते तैयार करते है। विविध प्रकार के हिंसक प्रशिक्षण देकर जान की आहूति देकर हिंसा में प्रवृत कराने के लिए प्रेरित करते है। ये राजनीतिक लाभ या लक्ष्य प्राप्ति के लिए हिंसा फैलाकर राजनीतिक और अपराध का अर्न्तमिश्रण करते है। आतंकवादियों के निशाने पर सार्वजनिक स्थल, सरकारी एवं व्यापारिक इलाके, प्रमुख धार्मिक स्थल, सेना के प्रतिष्ठान आदि होते है। आतंकवाद एक अलग तरह के कानून एवं व्यवस्था की समस्या है। आतंकवादियों की बेतुकी माँगो के प्रति सरकार को बलात झुकने के लिए की जाने वाली कार्रवाई इस अधिकार के लिए एक संगठित चुनौती है। आतंकवाद का प्रजातांत्रिक मूल्यों में रंचमात्र भी विश्वास नहीं होता।

आतंकवादः उद्भव, स्वरूप एवं आयाम

आतंकवाद शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांस में हुआ और रूस में इसे लोकप्रियता मिली। फ्रांस में इसका उपयोग प्रजातंत्र पर आधारित एक नई प्रशासनिक व्यवस्था को रूपायित करने के लिए किया गया। लेकिन शासकों के उत्पीड़नों तथा असंयमित हिंसात्मक कार्रवाईयों ने इसे राज्य के लिए एक डरावने स्वरूप में बदल दिया। इसी के बाद आतंकवाद ने इसे नकारात्मक अर्थ धारण कर लिया। रूस में शून्यवादियों ने जार के उत्पीड़नकारी शासन प्रणाली को उखाड़ फेंकने में आतंकवाद का सहारा लिया। व्यक्ति का समाज के साथ अति–एकीकरण या अल्प–एकीकरण के चलते आतंकवाद का जन्म होता है। समाजशास्त्रीय रूप में आतंकवाद का जन्म प्रकुति की अनियम की सिथति के लते होता है। मनोवैज्ञानिक रूप में आतंकवाद का जन्म मानस की शून्यता से होता है। अर्थशास्त्रीय रूप में आतंकवाद का जन्म सापेक्षिक वंचितवाद की अनुभूति से होता है।
आंकवाद द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पनपने वाली राजनीतिक सोच है। इसके पूर्व अपने विचार मनवाने के लिए संगठित हिंसा का गोपनीय प्रयोग अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर नहीं किया जाता था। द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त अर्न्तराष्ट्रीय विवादों को सुलझाने का ढंग बदला है। कुछ देश गोपनीय ढंग से अपना वर्चस्व बनाने में संलग्ण है। जब कोई देश यह देख लेता है कि विचारों के प्रचार–प्रसार के जरिए वह अपनी विचारधारा किसी दूसरे देश द्वारा मनवाने में सफल नहीं हो पाता है तो उस देश की सत्ता पलटनें में परोक्ष रूप से मदद करता है। उस देश में कोई संगठन खड़ा कर दिया जाता है। फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन ऐसा ही आतंकवादी उदाहरण है। इसी प्रकार पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी संगठन ''तालिवान'' है, जिसने अफगानिस्तान के बहुत बडे भाग पर अधिकार कर लिया है। कई देश आतंकवाद एवं आतंकवादी संगठनों को प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से मदद कर रहे है। आतंकवादी संगठन का एक दूसरा उदाहरण ओसामा–विन–लादेन द्वारा संगठित ''अलकायदा'' है। यह एक व्यक्ति द्वारा संगठित धार्मिक कट्टरता पर आधारित संगठन है, जिसका उद्देश्य राजनीतिक है। इस्लामी देशों पर से अमेरिका वर्चस्व को समाप्त कर इस्लाम धर्म एवं इस्लाम के अनुयायियों के हितों की रक्षा इसका उद्देश्य है।
विकासशील देश मुख्यतः आतंकवाद का प्रकोप झेल रहे है। अफ्रीकी एवं एशियाई देशों में आतंकवाद सर्वाधिक है। भारत भी कई प्रकार के आतंकवाद का सामना कर रहा है, जैसे– प्रजातीय आतंकवाद, नक्सली आतंकवाद, साम्प्रदायिक आतंकवाद। सीमा पार आतंकवाद देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर मुद्दा है। पाकिस्तान निरन्तर भारत विरोधी रूख अपनाए हुए है तथा यह राज्य–समर्पित आतंकवाद का उपयोग विदेशनीति के एक साधन के रूप में करता है। भारत को I.S.I. से गम्भीर खतरा है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत की आंतरिक सुरक्षा को क्षति पहुँचाना है। भारत की सीमा उत्तर–पश्चिम में अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान, उत्तर में चीन, भूटान, नेपाल, पूर्व में म्यांमार एवं बांग्लादेश तथा दक्षिण में श्रीलंका के साथ है। जम्मू–कश्मीर में आतंकवाद सीमापार में प्रायोजित आतंकवाद का नमूना है। आजकल आतंकवाद मादक द्रव्यों की तस्करी से जुड गया है। अफगानिस्तान अफीम का मुख्य उत्पादक देश है। आतंकवाद के विभिन्न कारणें में राजनीतिक, धार्मिक, समाजिक, आर्थिक आते है। आतंकवाद वर्त्तमान परिपेक्ष्य में एक संगठित प्रयास के रूप में प्रकट है, जो विश्व शांति, सुव्यवसथा एवं सामान्य जनजीवन को प्रभावित करता है। इसकी जड़ें आधुनिक विश्व में गहरे रूप में फैल रही है जिसका समूल नाश या निदान आवश्यक है।

आतंकवाद एवं विश्व–शांति

स्पष्टतः विश्व के विभिन्न राष्ट्र विभिन्न गुटों में बँटतें नजर आते है। एक ओर विकसित राष्ट्र है जो सम्पन्न है तथा दूसरी ओर विकासशील देशों का उभरता हुआ वर्ग है जहाँ संसाधनों का अभाव, निर्धनता, निरक्षरता व्याप्त है। इन राष्ट्रों को अपनी सुरक्षा एवं अस्तित्व–रक्षा के लिए सामरिक हथियारों पर भारी धन व्ययय करना पड़ता है। युद्ध का उन्माद विश्व मानवता के लिए एक खतरा उपस्थित करता है। महाहवनाश के विकसित अस्त्र–शस्त्र तथा जैविक रासायनिक हथियारों के विश्व व्यापी आतंकवाद के हाथों में जाने का खतरा बढ चुका है। राष्ट्रों के अहं टकराने लगे है। यही विश्वव्यापी आतंकवाद आज निस्संदेह वैश्विक शांति का प्रमुख शत्रु है। हिरोशिमा एवं नागाशाकी का दाग अभी मानवीय समुदाय के चेहरे से धुल नहीं पाया कि महीवनाश की तरफ बढता हुआ आतंकबादी विज्ञान और हठधर्मी वर्ग, समुदाय के लोगो ने इस विश्व–शांति को एक भयावह आग की ओर मोड़ दिया है। न्यायिक मूल्यों की रक्षा तथा सभी देशों में शांति, सदभाव, सुरक्षा तथा सार्वजनिक हित के लिए बनी प्रयोगशाला अर्थात संयुक्तराष्ट्र संघ की ओ लोगों की निगाहें टिकी है। आतंकवाद की चपेट में आए विभिन्न देशों में आतंकवाद की समस्या तथा आतंकवादियों को समूल नष्ट करने के लिए कई प्रकार के प्रतिबंध एवं कानून बनाए है। किन्तु विभिन्न देशों के बीच अर्न्तराष्ट्रीय कानून के अन्तर्गत पारस्परिक सहयोग एवं सद्भाव से ही विश्व–शंति संभव है। भारत ने आतंकवाद की समस्या का लोकतांत्रिक हल निकालने का प्रयास किया है। पोटा नामक कानून भारत सरकार ने आतंकवादी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाने के लिए लगाया है।

सुझाव

- लोकतांत्रिक पद्धति द्वारा शासन–प्रशासन एवं समाज व्यवस्था का संचालन हो।
- जनहित के सार्वजनिक, कल्याणकारी कार्यो पर सरकार विशेष ध्यान दें।
- विकासशील देशों से अज्ञानता, निरक्षरता, गरीबी, बेरोजगारी मिटाने का प्रयास हो।
- लोगों में राष्ट्रीय चरित्र विकसित करने हेतु देश–प्रेम, सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकता का विकास हो। क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता, समाजिक कुरीतियों को विनष्ट किया जाय।
- आतंकवादी संगठनों को प्रोत्साहन न मिले। असमाजिक तत्वों/विद्रोही गुटों की भावनाओं को देखते हुए उनकी जायज माँगों पर विचार किया जाय।
- आतंकवाद से निपटने के लिए विशेष संगठन प्रत्येक देश में रहे, जो इन गतिविधियों पर नजर रखे।
- संयुक्तराष्ट्र के माध्यम से पारस्परिक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, प्रगति तथा शांति के प्रयास किए जाए।
- वैश्वीकरण की रफ्तार को तीव्र करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रगाढ करने हेतु आतंकवाद का खातमा आवश्यक है।

संदर्भः

1. पुष्पेश एण्ड पाल जैन (2000), अर्न्तराष्ट्रीय संबंध
2. मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ (पृष्ठ संख्या– 120–150)
3. अग्रवाल गोपाल कृष्ण, समाजशास्त्र, एस0बी0पी0डी0 प्रकाशन, नैनीताल
4. योजना फरवरी, 2003
5. कुरूक्षेत्र, दिसम्बर, 2009
6. सिविल सर्विसेज टाइम्स, सितम्बर, 2007
7. वर्मा दीनानाथ, राजनीतिक विज्ञान, 1995, स्टुडेण्ट्स फ्रेण्ड्स प्रकाशन, पटना
8. जौहरी जे0 सी0, राजनीतिक विज्ञान, 2008, एस0बी0पी0डी0 प्रकाशन, दिल्ली